मनसा सेवा - 90

अव्यक्त बापदादा :- (03/02/2002)

➳ _ ➳ चौथी बात है सेवा - सेवा द्वारा सभी को अनुभव है, **जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। तो चेक करो सेवा द्वारा खुशी की अनुभूति कहाँ तक की है? अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई तो वह सेवा यथाश्र सेवा नहीं है।** सेवा में कोई न कोई कमी है, इसलिए खुशी नहीं मिलती है।

➳ _ ➳ **सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को खुशनुमः खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी।** तो चेक करो - सारा दिन सेवा की लेकिन सारे दिन की सेवा की तुलना में इतनी खुशी हुई या सोच-विचार ही चलते रहे, यह नहीं ये, यह नहीं ये.? और **आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं पर पडे, वायुमण्डल खुश हो जाए। यह है सेवा का खजाना खुशी।**

➢➢ **<u>सेवा से खुशी मिले, तो वह सेवा यथार्थ सेवा है...</u>**

➳ _ ➳ कौन खुश होते हैं...

→ सेवा स्थान

→ सेवा साथी

→ जिन आत्माओं की सेवा की...

→ स्थान

→ वायुमंडल

→ स्वयम भगवान

➢➢ ज्ञान का उल्टा नशा/ कौन सी बाते जिन्हें हम ज्ञान समझते हैं, पर है नहीं?

➳ _ ➳ मुरली सुनना, पढ़ना या सुनाना

→ केवल यही ज्ञान नहीं है...

→ ये ज्ञान का अभिन्न अंग है... पर सिर्फ यही ज्ञान नहीं है...

➳ _ ➳ मुरली का चिंतन करना

→ केवल ये चिन्तन सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है...

→ ज्ञान बहुत ऊँची अवस्था है...

■ अज्ञान अन्धकार में भटकाता है और ज्ञान महा अन्धकार में...

■ यदि वो ज्ञान यथार्थ न हो तो...

▶ क्योकि ऐसा ज्ञान अहंकार लाता है...

▶ ज्ञान के साथ विनय नहीं तो वह अंधकार है...

➳_ ➳ 7 दिन का कोर्स कराना

→ कोर्स कराके खुद को महा ज्ञानी समझना...

→ केवल यही ज्ञान नहीं है...

➳_ ➳ प्रदर्शनी समझाना

➳_ ➳ क्लासेज करवाना

➳_ ➳ सेमिनार, वर्क शॉप करवाना

➳_ ➳ हम सब कुछ जानते है...

→ हमें कुछ भी जानना बाकि नहीं है...

➢➢ ज्ञानी की निशानी है

➳_ ➳ मै कुछ भी नहीं जनता...

➳_ ➳ अभी बहुत कुछ जानना बाकि है..

→ कम समझदार भाव...

➳_ ➳ जब हम सेवा करते हैं तो हम खुश रहते हैं...

→ हमारे सेवा साथी भी खुश रहते हैं...

■ वो सेवा यथार्थ सेवा नहीं है जिसमे ख़ुशी नहीं है..

▶ यथार्थ सेवा वही है जिससे वायुमंडल में, स्वयम में, सेवा साथियों में, सकल विश्व में ख़ुशी की लहर फ़ैल जाये...

▶ यही वास्तविक और यथार्थ सेवा है...